पीएच० डी० शोधोपाधि हेतु शोध प्रबन्ध का प्रारूप

वैदिक वाङ्मय में उद्धृत नैतिक उपाख्यान : एक समीक्षात्मक अध्ययन

मानविकी संकाय

स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोध निर्देशिका

डॉ० निमिषा कुमारी

असिस्टेंट प्रोफेसर

संस्कृत विभाग

डोरण्डा महाविद्यालय, राँची

गवेषक

उदय कर्मकार

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही भारतीय समाज और साहित्य में नैतिक शिक्षा की धारा प्रवाहमान रहा है। वेद, उपनिषद, पुराण, स्मृति, रामायण और महाभारत में नैतिक जानकारी कभी-कभी कहानी या कहानी के बिना प्रस्तुत की जाती है।। नीति शब्द की उत्पत्ति नी धातु के साथ स्त्रियां क्तिन्, सूत्र के अनुसार क्तिन् प्रत्यय से हुई है। नी धातु का अर्थ है प्राप्त करना या देखना। जो नाना प्रकार से पथभ्रष्ट हो गए हैं और सदाचार से विमुख हो गए हैं, उन सभी मनुष्यों को असत्मार्ग से सन्मार्ग की ओर एवं अन्याय से न्याय की ओर संचालित जो करता है, वह नीति कहलाते हैं। नैतिक विषयों ने आम तौर पर नैतिक उपदेशों की वर्णन किया गया है, न केवल पंचतंत्र या हितोपदेश में, बल्कि लघुकथा-कथा उपाख्यान में भी नैतिकता के सिद्धांत असामान्य नहीं हैं।

संस्कृत व्याकरण के अनुसार चक्षिङ् धातु से आख्यान शब्द की उत्पत्ति हुइ है। चक्षिङ् धातु के साथ ख्यान आदेश होते हुये ख्या धातु के रूप धारण करते है। इस प्रकार आ उपसर्ग पूर्वक ख्या धातु के साथ ल्युट प्रत्यय करने से आख्यान शब्द की उत्पत्ति हुइ है। आख्यान एक घटना या घटनाओं की श्रृंखला के लिखित या वर्णित खाते के रूप में जाने जाते है। उसी प्रकार उप तथा आ उपसर्ग पूर्वक उपाख्यान शब्द की उत्पत्ति हुई है।विष्णु पुराण के तीसरे भाग के छठे अध्याय में, ऋषि पराशर मैत्रेय को सामवेद की शाखाओं, अठारह पुराणों और चौदह विद्याओं के बारे में बताते हैं। वहाँ कहा गया है- आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गार्थाभिः कल्पसिद्धिभिः। पुराणसंहितां चक्रे पुराणार्थविशारदः।। आमतौर पर आख्यान और उपाख्यान के बीच ऐसा कोई अंतर नहीं किया जाता है। हालाँकि, उनके मतभेद को स्पष्ट करने के लिए आचार्य श्रीधर स्वामी ने अपनी टिप्पणी में उल्लेख किया है- ‘स्वयं दृष्टार्थकथनं प्राहुराख्यानकं वुधाः’। ‘श्रुतस्यार्थस्य कथनमुपाख्यानम्’।अर्थात् स्वयंदृष्ट विषय का वर्णन ही आख्यान है, और सुनी हुई बात का कथन उपख्यान कहते है।

यद्यपि वेदों में अनेक आख्यान वर्णित हैं, फिर भी उन्हें 'आख्यान' नहीं कहा गया है। बाद में वेदांतर्गत संवादात्मक और कथात्मक वर्णन को सबसे पहले ब्राह्मण और आरण्यक में ‘आख्यान’ के रूप में परिभाषित किया गया था। ऐतरेय ब्राह्मण में शुन:शेप के प्रसंग को स्पष्ट रूप से- ‘तदेतत्पर ऋक्शतगाथां शौन:शेपम्-आख्यानम्’ पद से आख्यान कहा गया है। महर्षि वाल्मिकी ने भी अपनी रामायण में राम की संपूर्ण कथा को आख्यान कहा है। महाभारत में भी कथा-तत्त्व की प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं और कालानुक्रमिक घटनाओं को आख्यान कहा जाता है और उन आख्यानों के अंतर्गत प्रस्तुत लघुकथाओं को उपाख्यान भी कहा जाता है। महाभारत के वन पर्व के नलोपाख्यान, रामोपाख्यान आदि इसके स्पष्ट उदाहरण हैं। बृहददेवताके रचयिता ने शौनक कथन की शैली के आधार पर मंत्रों

को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया है। जैसे स्तुति, निन्दा, प्रशंसा, उपदेश, विलाप आदि। उनमें से पुरूरबा-उर्वशी सूक्त (ऋक्.-10.95) को आख्यान कहा जाता है। अन्यत्र इसे पवित्राख्यान भी कहा जाता है। प्राचीन ऋषियों ने उपाख्यानों के माध्यम से भारतीय चिंतन को सकारात्मक दृष्टिकोण दिया। यह कहा जा सकता है कि पौराणिक उपाख्यान केवल एक नीरस कथा की रूपरेखा नहीं हैं, बल्कि उनमें नीति, न्याय और सदाचार का समुचित समावेश है। आचार्य विश्वनाथ उनके साहित्यदर्पण के छठे अध्याय में आख्यानों के लक्षणों की चर्चा की गई है। कहते हैं – 'अस्मिन्नर्षे पुनः सर्गा भवन्त्याख्यानसंज्ञका'। अर्थात् ऋषियों द्वारा रचित महाकाव्यों में स्वर्ग को आख्यान कहा गया है। वैदिक साहित्य में पाए जाने वाले आख्यान्-उपख्यान न केवल यज्ञ को लोकप्रिय बनाने या लोगों को सहज रूप से यज्ञ में शामिल करने के लिए प्रकट होती हैं, बल्कि आख्यान-उपख्यानों के माध्यम से लोगों के धार्मिक जीवन, सामाजिक नियम, शिक्षा, विवाह प्रणाली और सामाजिक स्थिति की वर्णन भी करते हैं। इस कथा साहित्य या आख्यान का भारतीय विश्व साहित्य में बहुत बड़ा स्थान है।

अनुसंधान के उद्देश्य:

संस्कृत साहित्य में पाए जाने वाले उपाख्यान प्रायः यज्ञों और अन्य कर्मकांडों के समर्थक हैं या उनके प्रति मानवीय झुकाव पर आधारित है। सामान्य तौर पर इन उपाख्यानों को यज्ञ प्रक्रिया के महत्व एवं आवश्यकता को दर्शाने के लिए प्रस्तुत किये जाते हैं परन्तु यदि उनमें प्रवेश किया जाय तो समझ में आता है कि यज्ञ के विषय ही नहीं अपितु यज्ञ से बाहर की वस्तुओं की भी यहाँ समुचित चर्चा की गई है। नैतिक शिक्षा उनमें से एक है। कभी एकीकृत, कभी अलग या कभी कथा के माध्यम से विभिन्न संदर्भ में विचलित रूप से पाया जाता हैं, इस शोध का उद्देश्य वैदिक साहित्य में पाए जाने वाले आख्यानों की नैतिकता के आधार पर विचार करना है। उस उद्देश्य के लिए मैने वैदिक साहित्य में पाई जाने वाली कुछ कहानियों का चयन किया है। चूँकि संस्कृत साहित्य में उपलब्ध कहानी के उदाहरण रामायण जैसे उत्तर वैदिक साहित्य में भी पाए जा सकते हैं. उनकी तुलनात्मक आलोचना यहाँ शामिल है। ध्यान दें कि हालांकि कहानियों की सामग्री लगभग समान है, उन्हें अलग-अलग समय पर अलग-अलग संतों और कवियों द्वारा कथाओं के रूप में एक नए रूप में प्रस्तुत किया गया है।

विषय सारांश:

भारतीय सभ्यता और संस्कृति के शुरुआती चिन्ह वैदिक साहित्य में महसूस किए जाते हैं। वैदिक साहित्य देवी-देवताओं के स्वरूप का वर्णन करने, पूजा के विभिन्न रूपों, स्तुति, कर्मकांड गतिविधियों के साथ-साथ कई आख्यानों और उपाख्यानों का वर्णन करने में समृद्ध है। इन उपाख्यानों के माध्यम से अच्छा करने या बुराई से बचने की बात भी कही गई है। कभी-कभी एक दार्शनिक सिद्धांत, कभी-

कभी एक नैतिक कर्तव्य स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है। वैदिक साहित्य में उपलब्ध इन उपाख्यानों से कई प्रकार के नैतिक पाठ प्राप्त किए जा सकते हैं। वैदिक संहिता में पाए जाने वाले उपाख्यानों में पुरुरबा उर्वशी (10.95), यम-यमी (10.10), विश्वामित्र-नदी(3.33), इंद्र और अगस्ता संवाद (1.170), अगस्ता-लोपामुद्रा संगम (1.179), सरमापानी (10.108), इंद्र शामिल हैं। बृषकापि (10.86), इन्द्र-मरुत संवाद (10.65) आदि। उदाहरण के लिए, अक्षसूक्त में- अक्षराकृत के आदी जुआरी का आत्म-विलाप चौदह मंत्रों में व्यक्त किया गया है। वहाँ जुआरी ने सब कुछ खो दिया और जीवन के कड़वे अनुभव से अंत में उसने पासा खेलने के बजाय कृषि पर ध्यान देने को कहा- 'अक्षैर्मा दीव्य: कृषिमित् कृषस्व वृत्ते रमस्व बहु मन्यमान:'। वैदिक युग की यह चेतावनी आज के युग में भी उतनी ही प्रासंगिक है। इससे यह सलाह मिलती है कि केवल जुआ ही नहीं, किसी भी व्यसन से स्वयं को दूर रखकर स्वतंत्र कार्य के माध्यम से आजीविका सुरक्षित करनी चाहिए। पुरूरबा उर्वशी कथा मूल रूप से ऋग्वेद (10.95) में पाई जाती है, लेकिन इसका विकास शतपथ ब्राह्मण, महाभारत, पुराण, कथासरित्सागर, विक्रमोर्वशीय नाटकों में स्पष्ट है। साथ ही बंगाली साहित्य में कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की 'उर्वशी' 'स्वर्ग से विदाई' आदि मिलती है। उपाख्यान की समीक्षा कई नैतिकता प्रस्तुत करती है। उदाहरण के लिए, प्रतिश्रुति निभाने के लिए कहा जाता है। साथ ही स्त्री के प्रति आसक्त होकर अपना जीवन बर्बाद न करते हुए कुछ लक्ष्यों को पूरा करने की सलाह भी उक्त कथा में वर्णित है। यद्यपि च्यवन-सुकन्या कहानी ऋग्वेद के कुछ मंत्रों में पाई जाती है, लेकिन सर्वप्रथम एवं सबसे व्यापक रूप से यह शतपथ ब्राह्मण में पाई जाती है। इसके अतिरिक्त महाभारत के वनपर्व में भी इस प्रसंग का वर्णन मिलता है। उपाख्यान में एक आदर्शवादी, पतिनिष्ठा नारी पात्र को प्रस्तुत करके ऋषियों ने समाज को शिक्षा दी कि समाज में स्त्रियों को अपने पति की सेवा में समर्पित होना चाहिए। सुन्दर, आकर्षक पुरुषों के बहकावे में आकर कर्त्तव्य की उपेक्षा न करें। उपाख्यान में परोपकारिता का उदाहरण भी प्रस्तुत किया गया है।

ऋग्वेद के दो ब्राह्मण ऐतरेय और कौषीतकी हैं। इस ऐतरेय ब्राह्मण में विभिन्न आख्यानों और उपाख्यानों के निशान हैं। जैसे कबष ऐलुष के उपाख्यान(2.8.1), ऋषि नाभानेदिष्ट मानव की कहानी (5.22.9), शुन:शेप कहानी (3.33), पशु सम्बन्धित कहानी (2.6.8), गायत्री द्वारा सोमाहोराना के बारे में उपाख्यान (3.13.13), प्रजापति सम्बन्धित उपाख्यान (3.13.9), आदि। शुक्लजुर्वेदिक शतपथ ब्राह्मण में इन्द्र विश्वरूप (2.6.3), श्रम तप श्रद्धा कथा (14.1.1.1), मनुमत्स्यकथा आख्यान (1.8.1), सुपर्णी कद्रू की कहानी (2.6:2), वाक् और मन की कहानी (3.2.1) आदि। कृष्ण यजुर्वेद के तैत्तिरीय ब्राह्मण में इन्द्र-भारद्वाज की कथा (3.10), नचिकेता की कथा (3.11) आदि अनेक उपाख्यान हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्राप्त आख्यान समूह के पर्यालोचना करने पर यह दृष्टिगत होता है, कि

प्राप्त नैतिक परामर्श साधारण होने पर भी वास्तविक जीवन में इसका अत्यधिक महत्व है। उदाहरण के लिए, शुनशेप के उपाख्यान में नैतिकता यह है कि व्रत या वचन भंग करने का परिणाम बहुत भयानक होता है, जैसा कि राजा हरिश्चंद्र के पेट की बीमारी की घटना से स्पष्ट होता है। इसलिए अगर हम कोई वादा करते हैं तो उसे निभाना हमारा कर्तव्य है। माता-पिता की आज्ञा का हमेशा पालन करने और पापी व्यक्ति के संपर्क से बचने के लिए दृष्टान्त में कई चेतावनियाँ व्यक्त की गई हैं। यहाँ सदा भ्रमण करने की सलाह भी 'चरैवेति' शब्द से मिलती है। नाभानेदिष्ट मानव की कथा के अनुसार, मनुपुत्र नाभानेदिष्ट विद्यार्जन के लिए गुरुगृह में रह रहे थे। गुरुगृह में रहने के दौरान उन्हें आचार्यों से कई बहुमूल्य सलाह मिलीं। जैसे- 'सत्यं वद। धर्मं चर । सत्यान्न प्रमदिव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम' आदि। वैदिक युग का यह उपदेश आज भी पाठशाला,कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में, प्रोफेसर या कुलपति दीक्षांत समारोह देते हैं। इसलिए, इस कहानी का रहस्योद्घाटन सच्चाई को स्थापित करने के लिए हो सकता है। विश्वरूप और इंद्र की कहानी मुख्य रूप से शतपथ ब्राह्मण में मिलती है, लेकिन इसके निशान ऋग्वेद में भी मिलते हैं। इसके विकास के निशान बाद के भागवत पुराण और महाभागवत पुराण में भी पाए जाते हैं। यद्यपि कथा पुरोहित गतिविधियों की प्रशंसा में लिखी गई है, इसमें कई नैतिक सलाहें हैं। इंद्र को मारने के लिए त्वष्टा द्वारा किए गए यज्ञ में यज्ञ के दौरान भुल मंत्र का पाठ किया गया था। नतीजतन उसकी मौत हो गई। इसलिए मनोवांछित फल पाने के लिए उचित मंत्रों का जाप करना चाहिए। और अतिशय सर्वत्र बर्जयेत् यह शिक्षा भी पाई जाती है। शराब की लत के कारण आज का समाज विनाश के कगार पर है। इसलिए यहां शराब से दूर रहने की सलाह भी दी जाती है।

मनुमत्स्यकथा नामक उपाख्यान शातपथ ब्राह्मण के मध्यन्दिनशाखा के प्रथम खंड के आठवें अध्याय में मिलता है। हालाँकि शतपथ ब्राह्मण में कथा पर व्यापक रूप से चर्चा की गई है, कुछ लोग इसे ऋग्वेद के वरुणसूक्त (7.88) में पूर्वाभास मानते हैं। साथ ही कथा को बाद के साहित्य अर्थात् महाभारत, भागवत पुराण, मत्स्य पुराण, अग्नि पुराण, विष्णु पुराण, भविष्य पुराण में लगभग 15 पुराणों में अलग-अलग स्थान-काल-पात्रों में प्रस्तुत किया गया है। हालाँकि कहानी का उद्देश्य मानव जाति की रक्षा करना है, लेकिन इस कथा को कई तरह से बदल दिया गया है और जनता में कई सलाह भी उपलब्ध हैं। मनुष्य और प्रकृति के एक दूसरे के पूरक या एक दूसरे की मदद करने का उदाहरण मनु और मत्स्योपख्यान के माध्यम से प्राप्त होता है।

उपनिषदों की सबसे दिलचस्प विशेषताओं में से एक सत्य या नैतिक सलाह की खोज है। कठोपनिषद की यम नचिकेता गाथा, केनोपनिषद की उमा हैमवर्ती गाथा भी बृहदारण्यकोपनिषद के पिता-याज्ञवल्क संगम (3.1.1-10), यज्ञबंध- मैत्रेयी संगम (2.4.1-14), बालकी-अजातशत्रु संगम (2.1.1-

20), दम दान-दया (5.2.13) के बारे में कथा, छांदोग्योपनिषद की जानश्रुति और रैक्क कथा (4.1-3), श्वेतकेतु-प्रवाहन संगम (5.3-10), सत्यकाम जाबालि कथा (4.4- 9) आदि। उपाख्यानों का गुच्छा उपलब्ध है। यम नचिकेता विशेषण मुख्य रूप से कठोपनिषद में मिलता है। लेकिन इसका प्रमाण हमें ऋग्वेद में मिलता है। उपाख्यान में, युवा नचिकेता का अनुकरणीय चरित्र, सत्य के प्रति प्रेम और मृत्यु की निडरता प्रकट होती है। उपनिषदों के यम-नचिकेता का एक संदर्भ समाज को कई सीख दी हैं। अनावश्यक उपभोग को त्यागने, अनुचित लोभ और पितृभक्ति के उपदेशों का वर्णन यहाँ किया गया है। साथ ही 'उत्तिष्ठित जाग्रत' अर्थात् उठो और जागो का परम उपदेश भी तैयार विशेषणों में विशेष रूप से वर्णित है। द-द-द की जिस कथा की चर्चा की गई है वह बृहदारण्यक उपनिषद की है। किंवदंती में, देव, मनुष्य और असुर शब्द तीन अलग-अलग प्रकृति वाले मनुष्यों को दर्शाते हैं। दूसरे शब्दों में, समाज में लालची या स्वार्थी, हिंसक, दुष्ट दिमाग वाले लोगों को सृष्टि के संतुलन को नष्ट करने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करने से रोकने के लिए 'दाम्यत दत्त दयद्धमिति' उपनिषद के इस वाक्यांश द्वारा सभी चीजों में संयम की बात करते हैं।

आजकल हर किसी में खड़े होकर सच बोलने की हिम्मत नहीं होती। भले ही सत्य अप्रिय हो सत्यकाम ने ऋषि गौतम को इसका खुलासा किया। परिणामस्वरूप उन्होंने अब्राह्मण होते हुए भी उनका शिष्यत्व प्राप्त किया। कहा जा सकता है कि अब्राह्मण के इस विषय को प्रस्तुत करके वैदिक ऋषि यह व्यक्त करना चाहते थे कि मानव के कर्म ही मुख्य है। दूसरे शब्दों में, किसी व्यक्ति को उसके जन्म के आधार से नहीं बल्कि उसके कर्म के आधार पर विचार करना चाहिए।

अतः कहा जा सकता है कि ये सभी कहानियाँ और उपाख्यान न केवल तत्कालीन समाज के जन मानस के व्यसन के लिए रचे गए बल्कि इनके माध्यम से कथाकारों ने उस समय के समाज को उपदेश भी दिए।

संभावित अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय : उपाख्यान क्या है? उपाख्यान की उत्पत्ति और विकास

द्वितीय अध्याय : ऋग्वेदसंहिता में नैतिक उपाख्यान और उनका निर्णय

१. अक्षसुक्त: एक किताब की कहानी
२. पुरुरवा उर्वशी उपाख्यान
३. च्यवन सुकन्या उपाख्यान
४. अगस्ता-लोपामुद्रा उपाख्यान

तृतीय अध्याय : ब्राह्मणों और उनके विकसित रूपों में पाए जाने वाले नैतिक उपाख्यानों का एक सर्वेक्षण

१. शुनःशेप उपाख्यान
२. नाभानेदिष्ट मानव का कहनी
३. विश्वरुप-ईन्द्र उपाख्यान
४. मनुमत्स्यकथा

चतुर्थ अध्याय : उपनिषदों में पाए जाने वाले नैतिक उपाख्यान और उनका पुनर्मूल्यांकन

१. यम-नचिकेता उपाख्यान
२. द-द-द उपाख्यान
३. सत्यकाम-जावाल उपाख्यान
४. जानश्रुति और रैक्क कथा

पञ्चम अध्याय :वैदिक साहित्य में उद्धृत उपाख्यानों के विकसित रूपों की अनुसंधान

निष्कर्ष

उस समय से लेकर अब तक के संस्कृत साहित्य में उपलब्ध उपाख्यानों की नैतिक सलाह अज्ञानता के अंधकार से छोटी से बड़ी तक की पूरी मानव जाति है। ज्ञान के आलोक में सभी बंधनों से पूर्ण मुक्ति का मार्ग दिखाकर सुन्दरता से जीने की प्रेरणा देता है। साथ ही, बाद के कवियों ने संस्कृत साहित्य के इन उपाख्यानों से कई तत्वों को इकट्ठा करके अपनी प्रतिभा के प्रकाश में संस्कृत साहित्य को समृद्ध किया।

ग्रंथ सूची

अनिर्वाण, वैदिक साहित्य (वेद मीमांसा खंड I और II), कलकत्ता: संस्कृत बुक डिपो,2017 (दूसरा संस्करण)।

गंभीरानंद, स्वामी. उपनिषद (खंड II और III), कलकत्ता: उद्बोधन कार्यालय, 1426। (24 वाँ रेव। मु।)।

गोप, युधिष्ठिर, वैदिक साहित्य का इतिहास, कलकत्ता: संस्कृत बुक डिपो, 2012 (संशोधित म्यू)।

जुस्टानंद, स्वामी। कठोपनिषद, कलकत्ता: उद्घाटन कार्यालय, 2016 (8वां संस्करण)।

भट्टाचार्य, भवानीप्रसाद और तारकनाथ अधिकारी, वैदिक संग्रह, खंड I और II कलकत्ता:संस्कृत बुक डिपो, 2019,

मंडल, देवदास, कहानियों में राजनीति की बाधा, कोलकाता: संस्कृत बुक स्टोर, 2018,

भौमिक, जाह्नवीचरण, संस्कृत साहित्य का इतिहास (वैदिक और धर्मनिरपेक्ष), कलकत्ता: संस्कृत बुक डिपो, 2016 (पुन, म्यू)।

Reveda. Ed. Durgadas Lahiri. Rgvedasambit

Rgvedasamhita. Ed. Braj Bihari Chaubey. Asvalayna-samhita of the Rgveda Vol. I-II. New Delhi: Indra Gandhi National Centre for the Arts, 2009. Print.

Bisnupuranam. Ed. Pancanan Tarkaratna. Kolkata: Navabharat Publishers, 1417.

Garudapuranam. Ed. Pancanan Tarkaratna. Kolkata: Navabharat Publishers,1907. Print.

Bandyopadhyay, Shanti. Studies in the satapatha Brahmana. Calcutta: Sanskrit Pustak Bhandar, 1993. Print.

Hume, R.E. The Thirteen Principal Upanisads. Oxford, 1921.

Macdonell. Vedic Mythology. New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers Pvt.Ltd., 2000. Print.